

डॉ. टिम गोम्बिस , गलातियों, सत्र 3, गलातियों 1:11-2:10

© 2024 टिम गोम्बिस और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. टिम गोम्बिस द्वारा गलातियों की पुस्तक पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह गलातियों 1:11-2:10 पर सत्र 3 है।

गलातियों पर इस तीसरे व्याख्यान में आपका स्वागत है। इस व्याख्यान में मैं गलातियों 1.11 से 2.10 तक के बारे में बताने जा रहा हूँ, जिसमें वास्तव में 1.11 से लेकर अध्याय 1 से 1.24 के अंत तक के पाठ के दो खंड शामिल हैं। पॉल अपने स्वयं के सुसमाचार प्रदर्शन की रिपोर्ट देता है। वह अपने सुसमाचार की दिव्य उत्पत्ति के बारे में विस्तार से बताता है, लेकिन मैं इसे इस तरह से सोचना पसंद करता हूँ कि पॉल किस तरह से सुसमाचार का प्रदर्शन करता है। या, हम इसे इस तरह से कह सकते हैं, कि सुसमाचार पॉल का प्रदर्शन कैसे करता है।

क्योंकि वह यह बताने की कोशिश कर रहा है कि कैसे उसका जीवन यीशु मसीह का रहस्योद्घाटन बन गया है। उसका जीवन मूल रूप से सुसमाचार का चित्रण है। वह ऐसा इसलिए करता है ताकि गैलाटियन दर्शकों को यह समझने में मदद मिल सके कि सुसमाचार उनके समुदायों में कैसे प्रवेश करना चाहता है, चीजों को हिलाना चाहता है, और सब कुछ फिर से व्यवस्थित करना चाहता है।

तो यह पहली बात है जिसे हम देखेंगे। दूसरा, 2:1 से 2:10 में, पौलुस यरूशलेम की अपनी पहली यात्रा, वहाँ कैसे हालात हुए, और तथाकथित यरूशलेम स्तंभों के साथ अपने रिश्ते के बारे में बात करता है जो गलातियन समुदायों के जीवन में प्रभावशाली साबित हो रहे हैं।

तो, आइए सबसे पहले अध्याय 1, श्लोक 11 से 24 को देखें।

जैसा कि मैंने कहा, पॉल के सुसमाचार की दिव्य उत्पत्ति, या जिसे मैं पॉल के सुसमाचार प्रदर्शन कहना पसंद करता हूँ। यहाँ पॉल की बयानबाजी दो स्तरों पर काम करती है। वास्तव में, सतही स्तर पर, पॉल, इस खंड में, अपने सुसमाचार और अपने प्रेरितिक मंत्रालय की दिव्य उत्पत्ति को स्पष्ट या बचाव कर रहा है।

पौलुस ने अपनी प्रेरितिक सेवकाई को कहीं से भी नहीं बनाया। उसे परमेश्वर की ओर से बुलावा मिला था, और इसीलिए वह जो कर रहा है, वह कर रहा है। वह चाहता है कि गलातियों को यह बात समझ में आए।

इसके अलावा, हालांकि, पॉल सुसमाचार के प्रदर्शन के रूप में अपने स्वयं के जीवन पर विस्तार से बताने जा रहा है। कहने का तात्पर्य यह है कि, जब आप सुसमाचार के आह्वान से पहले और बाद में पॉल के जीवन को देखते हैं, तो आप देख सकते हैं कि उसका अपनी यहूदी विरासत के

साथ एक रिश्ता था जो एक दिशा में गया और उसके कुछ निश्चित परिणाम हुए। अब, इसका नाटकीय रूप से अलग-अलग प्रभाव पड़ा है, और हम देखेंगे कि वे कैसे सामने आते हैं।

इसलिए, वह अपनी खुद की जीवन कहानी बता रहा है क्योंकि यह सुसमाचार का परिणाम है। उसका जीवन सुसमाचार का परिणाम बन गया है। यह खंड पद 11 में तीन लगातार वाक्यों के साथ शुरू होता है जो प्रत्येक संयोजन से शुरू होते हैं।

संयोजन चार। अब, जब आप इस तरह का संयोजन देखते हैं, तो आमतौर पर मेरी बाइबल कक्षाओं में, मैं संयोजनों के चमत्कारों और महिमा के बारे में बात करता हूँ। मैं अब आपको इन सब बातों से बोरे नहीं करूँगा।

लेकिन जब आप इन लगातार चार लोगों को देखते हैं, तो वे कुछ कर रहे होते हैं। पॉल आमतौर पर कुछ समझा रहा होता है या शायद वह अपने द्वारा दिए गए किसी कथन के तर्क को स्पष्ट कर रहा होता है या शायद वह किसी बात को विस्तार से बता रहा होता है या वह अपने द्वारा दिए गए किसी दावे का आधार प्रदान कर रहा होता है। यह थोड़ा असामान्य है क्योंकि वह लगातार तीन कथनों की शुरुआत इसी तरह से करता है।

पद 11 में, वह कहता है, मैं चाहता हूँ कि तुम जानो कि मेरा सुसमाचार मनुष्य से नहीं है। फिर, पद 12, क्योंकि यह यीशु मसीह के रहस्योद्घाटन के माध्यम से आया था। फिर, पद 13, क्योंकि तुमने यहूदी धर्म में मेरे पिछले जीवन के तरीके के बारे में सुना है।

अब, उन कथनों में से पहले और दूसरे के बीच का संबंध सहायक है। यानी, पौलुस अपने दावे के लिए आधार प्रदान कर रहा है। इसलिए, पद 11 में, मैं चाहता हूँ कि तुम जान लो, भाइयों, कि जो सुसमाचार मैंने प्रचार किया वह मनुष्य के अनुसार नहीं है।

चार, और इससे मेरा मतलब यह है कि मैं आपको यहाँ प्रमाण दे रहा हूँ: मुझे यह मनुष्य से नहीं मिला, न ही मुझे यह सिखाया गया, बल्कि मुझे यह यीशु मसीह के रहस्योद्घाटन के माध्यम से मिला। फिर, दूसरा चार, पद 13 में, दूसरा संबंध, विस्तृत होने जा रहा है। तो, पद 13 में, पॉल चार कहता है, तुमने यहूदी धर्म में मेरे पिछले जीवन के तरीके के बारे में सुना है, आदि, आदि, आदि।

इसलिए, वह श्लोक 11 में दावा करता है, मैं चाहता हूँ कि आप जान लें कि मेरा सुसमाचार मनुष्य के अनुसार नहीं है क्योंकि इसका मूल ईश्वरीय है। अब, मैं विस्तार से बताता हूँ। अब, मैं यह कहना चाहता हूँ कि मेरा क्या मतलब है।

मैं आगे जाकर यह बताना चाहता हूँ कि कैसे मेरा जीवन यीशु मसीह का रहस्योद्घाटन है - या मुझे यह कहना चाहिए कि कैसे मेरा प्रेरितिक मंत्रालय यीशु मसीह के रहस्योद्घाटन का परिणाम है। सर्वनाश की हमारी चर्चा पर वापस आते हुए, यह ज़रूरी नहीं कि यह नई जानकारी के संदर्भ में रहस्योद्घाटन हो।

गलातियों में, एक अर्थ में रहस्योद्घाटन में इस वर्तमान विश्व व्यवस्था में किसी प्रकार के क्रांतिकारी प्रवेश का भाव अधिक है, जिसका नाटकीय प्रभाव पड़ता है। तो, लोगों के लिए जीवन

चलता रहता है, और पॉल के लिए भी जीवन चलता रहता है, और पॉल का जीवन मौलिक रूप से बाधित होता है। यह लगभग ऐसा था जैसे स्वर्ग खुल गया हो, और यीशु मसीह, अपनी आत्मा के द्वारा, बस नीचे पहुँचे, पॉल के जीवन को थाम लिया, और नाटकीय रूप से इसे बदल दिया।

दमिश्क के रास्ते पर उनकी गिरफ्तारी के दौरान उनके साथ कुछ नाटकीय हुआ। अब उनका पूरा जीवन-दिशा-निर्देश नाटकीय रूप से बदल गया है। जहाँ एक समय में उनका जीवन-दिशा-निर्देश मानवीय क्षेत्र में सभी प्रकार की सामाजिक गतिशीलता द्वारा निर्धारित होता था, वहीं अब उनका जीवन-दिशा-निर्देश इस नए सृजन क्षेत्र से आने वाली गतिशीलता के एक नए सेट द्वारा उन्मुख है।

क्योंकि यही वह क्षेत्र है जिसमें मसीह प्रभु है और जिसमें पॉल अब अपना जीवन जी रहा है। तो, सुसमाचार ने पॉल के जीवन को कैसे बदल दिया? आइए इस अंतर के आयामों को देखें। पॉल यहूदी धर्म में अपने पूर्व जीवन के बारे में बात करता है।

यहूदी धर्म में इस पूर्व जीवन शैली की प्रकृति क्या है? अब, मैं यहाँ स्पष्ट होना चाहता हूँ। जब पॉल यहूदी धर्म में अपने जीवन के तरीके के बारे में बात करता है, तो यह उस आधुनिक धर्म के समान नहीं है जिसे हम यहूदी धर्म के रूप में जानते हैं। पॉल यहूदी था, और वह एक यहूदी था, लेकिन जब वह उस अभिव्यक्ति का उपयोग करता है, यहूदी धर्म में अपने पूर्व जीवन शैली का, तो वह यहूदियों के बीच उस उपसमूह के बारे में बात कर रहा है जो यहूदी जीवन की शुद्धता, इज़राइल की शुद्धता के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध था।

वह उस समूह के बारे में बात कर रहे हैं जो यह सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध था कि सभी हेलेनाइजिंग प्रभावों को मुक्त रखा जाए, यहूदी जीवन की शुद्धता को किसी भी तरह के बाहरी सांस्कृतिक प्रभावों से साफ़ करने की कोशिश की जाए। इसलिए, वह वास्तव में बात कर रहे हैं, मैं उग्रवादी यहूदी धर्म शब्द का उपयोग नहीं करना चाहता, लेकिन भावुक, उत्साही यहूदी धर्म, जो इस धार्मिक समुदाय, यहूदी समुदाय के भीतर एक आंदोलन होता, जिसने इस समुदाय के लिए भगवान का आशीर्वाद प्राप्त किया होता। इसलिए वह केवल यहूदी धर्म में आगे बढ़ने वाला यहूदी नहीं है।

वह इस तीव्र, जोशीले, बलपूर्वक, भावुक किस्म के कामों में शामिल है। वे सत्ता हथियाने और पूरे देश के लिए एजेंडा चलाने का काम करते हैं। अब, उस तरह के समूह के हिस्से के रूप में, उस तरह के समूह में उसका जीवन कैसा था? आइए पॉल ने जो किया उसकी कुछ विशेषताओं पर नज़र डालें। इस तरह के जीवन की विशेषताएँ क्या हैं? आपने इस पुराने जीवन के तरीके के बारे में सुना होगा जिसमें मैं लिप्त था।

मैं किस तरह से चर्च ऑफ गॉड को हृदय से ज़्यादा सताता था और उसे नष्ट करने की कोशिश करता था, यह बहुत ही दिलचस्प है। इस बारे में सोचें कि कैसे पॉल, इस समुदाय का हिस्सा होने के नाते जो पवित्रता और इज़राइल के आशीर्वाद के लिए उत्साही है, सोचता है कि वह वास्तव में इज़राइल के लिए ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त करने जा रहा है और उसे एहसास होता है कि वह वास्तव में ईश्वर से लड़ रहा है और पृथ्वी पर ईश्वर के कार्य को नष्ट करने की कोशिश कर रहा है।

वह इस बारे में बात करता है कि कैसे वह अपने समकालीनों से आगे यहूदी धर्म में आगे बढ़ रहा था, इसलिए वह बाकी सभी की तुलना में अधिक उत्साही है, जो वह वास्तव में कहता है, मेरे पैतृक परंपराओं के लिए अधिक उत्साही होना।

मुझे लगता है कि यह कहना दिलचस्प है कि पॉल यह नहीं कहता कि वह परमेश्वर के लिए भावुक है, वह पवित्रशास्त्र के लिए भावुक नहीं है, वह परमेश्वर की महिमा के लिए भावुक नहीं है। वह परंपराओं के लिए प्रतिबद्ध है, वह जीवन के सभी तरीकों, शिक्षाओं, ज्ञान के उस समूह के लिए प्रतिबद्ध है जो उसके समूह ने खुद को बताया होगा, हम इसके लिए प्रतिबद्ध हैं, जो पवित्रशास्त्र के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को सुरक्षित करता है, या हम इसके लिए प्रतिबद्ध हैं, जो वास्तव में परमेश्वर के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का मूर्त रूप है। इतना प्रतिबद्ध होना बहुत आसान है; परमेश्वर के लिए उत्साही किसी भी व्यक्ति के लिए यह सोचना आसान है कि परमेश्वर के लिए उनका उत्साह परमेश्वर के लिए उत्साह है, जबकि यह वास्तव में उन विरासत में मिले तरीकों के लिए उत्साह है जो परमेश्वर के लिए उत्साह अतीत में मूर्त रूप ले चुके हैं।

धार्मिक समुदायों के भीतर उपसमूहों को हमेशा खुद से यह पूछना चाहिए कि क्या वे परंपरा के प्रति प्रतिबद्ध हैं या भगवान के प्रति। लेकिन यह सब, पॉल के जीवन में जो कुछ भी शामिल था, वह मूल रूप से मानवीय क्षेत्र जैसा दिखता है। यह नियंत्रण है, नियंत्रण के लिए जुनून है, पुराने विरासत वाले पैटर्न द्वारा पृथ्वी पर भगवान की वास्तविकता को आकार देने का जुनून है।

पॉल यह कोशिश कर रहा था कि परमेश्वर के लोगों को स्वीकार्य सांस्कृतिक अपेक्षाओं के अनुसार कैसे दिखना चाहिए। वह मूल रूप से परमेश्वर के कार्य को पालतू बनाने की कोशिश कर रहा था। अब, पॉल ने नहीं सोचा होगा कि वह यही कर रहा था, लेकिन पीछे मुड़कर देखने पर, वह देख सकता है कि वह वास्तव में यही कर रहा था।

लेकिन इस सबका बयानबाजी वाला प्रभाव, यानी, यहूदी धर्म में पौलुस का आगे बढ़ना, परमेश्वर के चर्च को सताना, उसे नष्ट करने की कोशिश करना, पूर्वजों की परंपरा के लिए उत्साही होना, इसका बयानबाजी वाला प्रभाव यह है कि इस तरह के यहूदी धर्म में उसका श्रेष्ठ होना वास्तव में परमेश्वर के उद्देश्यों से लड़ना है, जो उस पौलुस के लिए एक झटका था। धर्म परिवर्तन के बाद पौलुस समझता है कि वास्तव में यही उसका लक्ष्य था। खैर, उस जीवन लक्ष्य में पौलुस में परमेश्वर के पुत्र का यह रहस्योद्घाटन आता है, जो पद 15 में बात करने का एक बहुत ही दिलचस्प तरीका है।

लेकिन जब उसने मुझे अलग किया, मेरी माँ के गर्भ से ही, और अपने अनुग्रह के द्वारा मुझे बुलाया, तो वह मुझमें अपने पुत्र को प्रकट करने के लिए प्रसन्न हुआ। यही मेरा मतलब है जब मैं कहता हूँ कि यह परिवर्तन परमेश्वर का प्रदर्शन है, यह सुसमाचार का पौलुस का प्रदर्शन है, क्योंकि धर्म-परिवर्तन से पहले के पौलुस का धर्म-परिवर्तन के बाद के पौलुस में परिवर्तन ही यीशु मसीह का रहस्योद्घाटन है। यीशु उस परिवर्तित जीवन में प्रकट होते हैं।

मैं लंबे समय से इस अभिव्यक्ति से जूझ रहा था कि परमेश्वर ने पौलुस में अपने पुत्र को प्रकट किया। और मैंने सोचा कि क्या श्लोक 16 में, मुझमें, उस अभिव्यक्ति का बेहतर अनुवाद किया

जा सकता है कि परमेश्वर ने मुझमें अपने पुत्र को प्रकट किया। यह मुझे बहुत बेहतर अर्थ देता हुआ प्रतीत हुआ।

लेकिन मुझे यह समझ में आया कि यह रहस्योद्घाटन वास्तव में पॉल के भीतर घटित होने वाला रहस्योद्घाटन है। मुझे कहना चाहिए कि पॉल में। अब, यह वह आंतरिक अर्थ नहीं है जिसमें हम सभी के दिलों में यीशु है, या पॉल के दिल में यीशु है।

वह जो कह रहा है वह यह है कि उसका शरीर मूल रूप से एक ऐसा स्थान है, जो एक समय में पॉल की पैतृक परंपरा की महिमा का प्रतीक था। यह अब मसीह की महिमा है। उसका शरीर एक स्थान है, और उसका जीवन एक ऐसा स्थान है जिसे यीशु मसीह ने अपने अधीन कर लिया है और अब यह यीशु मसीह का प्रकटीकरण है।

आइए हम पौलुस के जीवन पर नज़र डालें, उसके धर्म परिवर्तन के बाद और उसके द्वारा बताए गए कुछ पहलुओं पर नज़र डालें, ताकि यह पता चल सके कि यह रहस्योद्घाटन वास्तव में कैसा दिखता है। यहाँ पद 15 में हमें पौलुस के लिए परमेश्वर का बुलावा मिलता है। परमेश्वर ने मुझे अपने अनुग्रह के द्वारा बुलाया और मुझमें अपने पुत्र को प्रकट करने में प्रसन्न हुआ।

पॉल में इस रहस्योद्घाटन में राष्ट्रों के बीच सुसमाचार का प्रचार करने का आदेश शामिल है। अब, पॉल के लिए यह एक नाटकीय उलटफेर है। याद रखें, यहूदी धर्म के भीतर उसका आगे बढ़ना राष्ट्र के भीतर एक छोटा, अलग-थलग, भावुक, उत्साही समूह है जो खुद को सभी प्रकार के विदेशी सांस्कृतिक प्रभावों से शुद्ध और बेदाग रखता है और बाकी राष्ट्र की शुद्धि का एजेंट बनना चाहता है, ताकि इसे सभी विदेशी प्रभावों से मुक्त रखा जा सके।

क्योंकि इस्राएल की सीमाओं के बाहर क्या है? पापी! यही परमेश्वर के न्याय का स्थान है। अब जब पौलुस को परमेश्वर ने बुलाया है, तो वह अपने शरीर में यीशु को प्रकट करेगा, जो राष्ट्रों को सुसमाचार प्रचार करने का उसका अभिन्न अंग होगा। तो, उस परिवर्तन के बारे में सोचिए।

एक संकीर्ण एजेंडे के प्रति प्रतिबद्धता जो राष्ट्रों को बहिष्कृत करने के लिए थी, अब राष्ट्रों को सुसमाचार का प्रचार कर रही है। यही यीशु मसीह का रहस्योद्घाटन है। राष्ट्रीय सीमाओं के पार इतने सारे रिश्तों के लिए इसके निहितार्थों के बारे में सोचें।

ईसाई लोग अन्य जातीय समूहों के लोगों को किस तरह देखते हैं? हम अन्य राष्ट्रों के लोगों को किस तरह देखते हैं? हम आप्रवासन के बारे में समकालीन बहस को किस तरह देखते हैं? विदेशी, अवैध विदेशी, वैध विदेशी। ईसाई इन सभी मुद्दों के बारे में कैसे सोचते हैं? अगर ऐसा है, तो पॉल के लिए यीशु मसीह के रहस्योद्घाटन में ईश्वर के लिए अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य पर लोगों के प्रति उनके दृष्टिकोण में परिवर्तन शामिल है। यहाँ इस परिवर्तन और रहस्योद्घाटन का पॉल के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा, यह बताया गया है।

जब हम इस संदर्भ में सामने आने वाली वास्तविक क्रियाओं को देखते हैं, जब ऐसा हुआ, जब परमेश्वर ने मुझमें अपने पुत्र को प्रकट करने की कृपा की, तो यहाँ बताया गया है कि पौलुस ने

क्या किया या क्या नहीं किया। उसने तुरंत मांस और रक्त से परामर्श नहीं किया। बहुत दिलचस्प है।

इसके बयानबाज़ी प्रभाव के बारे में सोचिए। उसने तुरंत मांस और खून से सलाह नहीं ली। पौलुस तुरंत यरूशलेम नहीं गया और यरूशलेम के अगुवों से बात नहीं की।

तो, वह यरूशलेम को निर्माण की मानवीय प्रक्रिया से जोड़ रहे हैं। यह बयानबाज़ी बहुत दिलचस्प है। बहुत सूक्ष्म है।

पॉल यह भी कहते हैं, मैं यरूशलेम में उन लोगों के पास नहीं गया जो मुझसे पहले प्रेरित थे। इसलिए, मुझे यहाँ नक्शा वापस लगा देना चाहिए था, लेकिन अगर आप सोचते हैं कि यरूशलेम भौगोलिक रूप से कहाँ है, और वह दमिश्क में है, तो उसने यरूशलेम जाने से पहले तीन साल इंतजार किया। अगर आप भौगोलिक आंदोलन और गलातिया में समस्या के बारे में सोचते हैं, तो उन पर यरूशलेम चर्च का प्रभाव है, जो मूल रूप से गलातिया के ईसाई जीवन को यरूशलेम के इर्द-गिर्द और यहूदी धर्म के स्तंभों के इर्द-गिर्द केंद्रित करने की कोशिश कर रहा है।

और पॉल यह कहने की कोशिश कर रहा है कि परमेश्वर यरूशलेम में बंद नहीं है। सुसमाचार राष्ट्रों के बारे में है। परमेश्वर यरूशलेम और यहूदियों और इस्राएल की भूमि से प्यार करता है, और वह रोम से प्यार करता है, वह अरब से प्यार करता है, वह मिस्र से प्यार करता है।

परमेश्वर मसीह में अपने उद्धार के कार्य में एक अंतर्राष्ट्रीय एजेंडे पर है, और पौलुस का जीवन उस परिवर्तन का मूर्त रूप है। इसलिए, जब वह रूपान्तरित होता है, और जब पौलुस में यीशु का अंश प्रकट होता है, तो यरूशलेम जाने की कोई आवश्यकता नहीं होती क्योंकि वह परमेश्वर के नए कार्य का केंद्र नहीं है। बल्कि, वह वहीं रहता है, वह अरब चला जाता है, और वह एक बार फिर दमिश्क लौटता है।

मुझे लगता है कि अरब से पॉल का मतलब सिर्फ़ सीरिया है। वह रेगिस्तान में नहीं जा रहा है, लेकिन मुझे लगता है कि पॉल ने वास्तव में अरब शब्द का इस्तेमाल किया है क्योंकि वह जानता है कि यह दर्शकों के लिए, गलातिया में यहूदी ईसाई दर्शकों के लिए थोड़ा ज़्यादा भड़काऊ होगा। फिर से, सुसमाचार का भौगोलिक कार्य यरूशलेम के इर्द-गिर्द केंद्रित नहीं है।

यह हर अलग दिशा में जा रहा है। जबकि पहले, पॉल का जीवन पूरी तरह से यरूशलेम और यहूदी धर्म के शुद्धिकरण के इर्द-गिर्द केंद्रित था, अब यह इन सभी अलग-अलग दिशाओं में जा रहा है। पॉल ने उल्लेख किया है कि, एक समय पर, वह यरूशलेम गया था।

यह आयत 18 के उनके धर्म परिवर्तन के तीन साल बाद की बात है। फिर, तीन साल बाद, मैं कैफा से परिचित होने के लिए यरूशलेम गया, और उसके साथ 15 दिन तक रहा। मैं वहाँ केवल तीन सप्ताह ही रहा।

क्षमा करें, मैं वहाँ केवल दो सप्ताह के लिए था। उसके बाद ही, तीन साल बाद, वह यरूशलेम के केंद्र में गया। श्लोक 19 और 20, यह दिलचस्प है, पॉल कहते हैं, लेकिन मैंने प्रभु के भाई याकूब को छोड़कर किसी भी अन्य प्रेरित को नहीं देखा।

अब, जो मैं आपको लिख रहा हूँ, उसमें मैं आपको ईश्वर के सामने आश्वस्त करता हूँ कि मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ। ऐसा लगता है कि श्लोक 19 और 20 वहाँ इसलिए हैं क्योंकि ये आंदोलनकारी, मिशनरियों के शिक्षक, आप उन्हें जो भी नाम देना चाहें, गैलाटिया में जो शिक्षक यरूशलेम से हैं, वे कुछ ऐसा कह रहे हैं, आप जानते हैं, पॉल का सुसमाचार कहीं से भी गढ़ा गया है। वह यरूशलेम के नेतृत्व द्वारा अधिकृत नहीं है क्योंकि जब हम वहाँ थे, तो हमने उसे कभी नहीं देखा।

निश्चित रूप से अगर उसे कमीशन दिया जा रहा होता, तो हम उसे वहाँ देख सकते थे। इसलिए, पॉल कह सकता है, शायद उसे यह कहने की ज़रूरत है, आप जानते हैं, मैं वहाँ केवल दो सप्ताह के लिए था और मैं किसी जनसंपर्क शो में नहीं जा रहा था। खैर, पॉल यहाँ पद 21 में अपने प्रदर्शन का वर्णन जारी रखता है, जब वह कहता है, फिर मैं सीरिया और किलिकिया के क्षेत्रों में गया, फिर से, एक अलग दिशा में और यरूशलेम के इर्द-गिर्द जीवन जीने की तुलना में अलग दिशाओं में जा रहा था।

फिर भी, इसका क्या नतीजा निकला? पौलुस के जीवन के परिणामस्वरूप जो कुछ हो रहा है, उसका शुद्ध लाभ क्या है? हालाँकि वह अभी भी यहूदिया के उन कलीसियाओं के लिए अज्ञात था, जो मसीह में थे, लेकिन केवल वे ही सुनते रहे। जिसने हमें सताया था, वह अब उस विश्वास का प्रचार कर रहा है जिसे उसने एक बार नष्ट करने की कोशिश की थी, और वे मेरे कारण परमेश्वर की महिमा कर रहे थे। मूल रूप से, यहूदिया में, पौलुस के परिवर्तित जीवन और राष्ट्रों के बीच सुसमाचार का प्रचार करने के उसके नए मिशन के परिणामस्वरूप यहूदिया में कलीसियाएँ परमेश्वर की महिमा कर रही हैं। तो फिर से, यहाँ अध्याय 1 के श्लोक 11 से 24 में पौलुस जो कर रहा है, वह दोहरा है।

वह गलातिया के शिक्षकों को पीछे धकेल रहा है। वह जो कुछ कर रहा है, उसका स्पष्टीकरण दे रहा है। यरूशलेम चर्च के साथ अपने संबंधों को स्पष्ट करने में वह एक तरह से रक्षात्मक उपाय कर रहा है।

लेकिन उससे परे, यह सुसमाचार के दृष्टिकोण से एक धर्मशास्त्रीय विवरण है कि जीवन कैसा दिखता है जिसे यीशु ने स्वयं अपने अधीन कर लिया है। ऐतिहासिक पैतृक विरासत के प्रति प्रतिबद्धता, यह सोचना कि वह प्रतिबद्धता भी ईश्वर के प्रति प्रतिबद्धता है, अब सुसमाचार के प्रति वास्तविक प्रतिबद्धता में बदल रही है, यहाँ तक कि सुसमाचार के प्रति प्रतिबद्धता भी नहीं, बल्कि केवल सुसमाचार द्वारा अपने अधीन की जा रही है, जिसके परिणामस्वरूप अंतर्राष्ट्रीय सेवकाई हो रही है। इसलिए, संकीर्ण ध्यान, बलपूर्वक, ईश्वर से लड़ना, अंतर्राष्ट्रीय यहूदी-गैरयहूदी सेवा जिसके परिणामस्वरूप ईश्वर की महिमा हो रही है।

और यहाँ पॉल की आशा है, ठीक वैसे ही जैसे उसके बहुत से पत्रों में जहाँ वह अपना व्यक्तिगत विवरण देता है, कि उसके श्रोता यह सोचना शुरू कर देंगे, ठीक है, हम पॉल के परिवर्तन को

देखते हैं, हम देखते हैं कि सुसमाचार ने उसके जीवन में क्या किया है, और यह एक मॉडल है कि सुसमाचार को हमारे जीवन पर, हमारे सामुदायिक जीवन पर कैसे प्रभाव डालना चाहिए। और पॉल जो देखना चाहता है वह यह है कि गलातियों के लिए यह हो कि वे गैर-यहूदी ईसाइयों का एक समुदाय बनें, जिनका जीवन यहूदी धर्म के इर्द-गिर्द उन्मुख न हो जैसा कि शिक्षक चाहते हैं, बल्कि उनका जीवन यीशु के इर्द-गिर्द उन्मुख हो, जो यरूशलेम के संपर्क में हो, लेकिन यरूशलेम द्वारा उन्मुख न हो। इसलिए, यह सोचते हुए कि सुसमाचार किस तरह से जीवन को बदलता है, हम यहाँ कुछ सबक ले सकते हैं।

जीवन पुरानी दुनिया और पुराने तरीकों से उन्मुख नहीं है। पौलुस को विरासत मिली थी, लेकिन उसका जीवन उन तरीकों से उन्मुख नहीं था। इसके अलावा, सामुदायिक जीवन और मसीह में जीवन ईश्वर से प्राप्त रहस्योद्घाटन के जवाब में जीया जाता है, न कि मानवीय ज्ञान के जवाब में।

यह मानवीय बुद्धि से प्रेरित नहीं है। और, बेशक, इस तरह के जीवन का परिणाम चर्च की ओर से ईश्वर की महिमा में होता है जो इस तरह के परिवर्तन के बारे में सुनता है। अगर हम बस रुकें, और यही मैं आमतौर पर गलातियों पर कक्षाओं के साथ करता हूँ, लेकिन अगर हम यहाँ रुकें और कुछ सवालों के बारे में सोचें, खासकर क्योंकि ये पॉल के अध्ययन के इतिहास में आते हैं, गलातियों जैसे ग्रंथ और नए नियम के कुछ अन्य ग्रंथ दुखद रूप से, चर्च और ईसाइयों के बीच पिछले 2,000 वर्षों में विकसित हो रहे यहूदी-विरोधी विचारों में महत्वपूर्ण रहे हैं।

क्या पॉल, फिर भी, यहूदी विरोधी है? क्या हम कह सकते हैं कि गलातियों, खासकर अध्याय 1 में पॉल द्वारा दिए गए कुछ कथन, यहूदी विरोधी कथन हैं? क्या वे यहूदी विरोधी भावना को दर्शाते हैं? मुझे कहना होगा, मुझे ऐसा नहीं लगता। मुझे नहीं लगता कि यहाँ कई कारणों से पॉल को यहूदी विरोधी कहने का कोई आधार है। सबसे पहले, पॉल यहूदी धर्म में जीवन के पूर्व तरीके के बारे में बात नहीं कर रहे हैं।

याद रखें, यहूदी धर्म का इस्तेमाल ठीक उसी तरह किया जाता है जैसे मैकाबीन साहित्य में यहूदियों के एक उपसमूह के बारे में बात करने के लिए किया जाता है जो यहूदी जीवन की शुद्धि के लिए पूरी लगन से प्रतिबद्ध हैं। मैं यहूदी धर्म के बारे में व्यापक रूप से बात भी नहीं करना चाहता क्योंकि इसे धर्म के रूप में नहीं माना जाता है, लेकिन वे यहूदी जीवन शैली के नवीनीकरण और शुद्धि के लिए पूरी लगन से प्रतिबद्ध हैं। पॉल अपने शारीरिक संबंधियों के प्रति हृदय विदारक प्रेम को प्रकट करता है, जैसा कि वह रोमियों 9 में कहता है। वह देखता है कि अपने लोगों की शुद्धि के लिए वह पूर्व जुनून गुमराह है, और यही वह चीज है जिससे वह दूर हो जाता है।

यहाँ कोई यहूदी विरोधी बयानबाजी नहीं है। इसके अलावा, वह यह कहना चाहता है कि उसका जीवन अब यरूशलेम से संचालित और उसके द्वारा नियंत्रित नहीं है। यह यरूशलेम से अपना भौगोलिक अभिविन्यास बिंदु नहीं लेता है।

हालाँकि, वह वहाँ जाता है। वह यरूशलेम के नेताओं के साथ अच्छे संबंध रखना चाहता है। इसलिए, बस इतना कहना है कि, जैसे-जैसे हम गलातियों के अध्याय को पढ़ते हैं, हम उस प्रश्न पर फिर से विचार कर सकते हैं।

इस पाठ में अब तक यहूदी विरोधी कुछ भी नहीं है। ठीक है, चलिए आगे बढ़ते हैं और गलातियों 2, 1 से 10 में क्या हो रहा है, इसके बारे में थोड़ा सोचते हैं। दरअसल, ऐसा करने से पहले, मुझे यहाँ थोड़ा पीछे हटना चाहिए और इसे एक सर्वनाशकारी ढाँचे में रखना चाहिए।

अगर हम उस ढाँचे के बारे में सोचें जिसका मैंने अपने पिछले व्याख्यान में स्लाइड में इस्तेमाल किया था, तो मेरे पास एक ऐसा परिदृश्य था जहाँ हम यहाँ युगों के क्रॉसओवर पर रह रहे हैं। मैंने कहा था कि यह वास्तव में वर्तमान बुरा युग है। मैं लिखने की कोशिश करूँगा ताकि आप देख सकें कि मैं वास्तव में यहाँ क्या लिख रहा हूँ।

हम कह सकते हैं कि यह पुरानी मानवता है, जो कि पॉल द्वारा अन्यत्र इस्तेमाल की गई भाषा है। यही वह है जिससे हमें क्रूस द्वारा मुक्ति मिली है। चर्च को क्रूस द्वारा इस ब्रह्मांडीय क्षेत्र से मुक्ति मिली है, और क्रूस ही वह माध्यम है जिसके द्वारा परमेश्वर ने इस नए क्षेत्र, अस्तित्व के ब्रह्मांडीय तरीके की नई रचना का निर्माण किया।

जब क्रूस हमारे जीवन का दावा करता है, तो क्रूस ही वह साधन है जिसके द्वारा हम अस्तित्व के इस नए क्षेत्र में लाए जाते हैं। पॉल अपने अधिकांश पत्रों में जब इस तरह की गतिशीलता के बारे में बात करता है, और वह गलातियों में इस बारे में बात करेगा, तो उसका उद्देश्य अपने समुदायों को अपने जीवन को पूरी तरह से नई सृष्टि के निवासियों के रूप में उनकी पहचान के इर्द-गिर्द केंद्रित करना है, न कि उनके जीवन को वर्तमान बुरे युग के साथ उनके निरंतर संबंध द्वारा उन्मुख करना है। पॉल यह पहचानता है कि चर्च इस तरह के जीवन के हिस्से में रहते हैं जहाँ हम युगों के ओवरलैप में रहते हैं।

मुझे लगता है कि पॉल यहाँ जो देखना चाहते हैं, वह उस उपसमूह के भीतर उनका जीवन है जिसे वे यहूदी धर्म कहते हैं। मेरी राय में, वे एक ऐसे जीवन-शैली में शामिल थे जो वर्तमान बुरे युग से पूरी तरह से प्रेरित थी। अब, मुझे लगता है कि यह भी एक और तरीका है जिससे हम कह सकते हैं कि पॉल की बयानबाजी यहूदी विरोधी नहीं है।

वह अपनी यहूदी विरासत से घ्यार करता है और उसके लिए आभारी है, लेकिन उस उपसमूह में उसकी सदस्यता को वह एक तरह की जीवन शैली के रूप में देखता है जो ईश्वर के उद्देश्यों के विरुद्ध काम कर रही थी। यह जरूरी नहीं कि एक सैद्धांतिक समस्या थी, लेकिन यह एक जीवन अभिविन्यास समस्या थी क्योंकि यह एक जबरदस्ती वाली जीवन शैली थी। यह सत्ता हथियाने की कोशिश थी।

यह सत्ता की चाहत थी। इसने उन्हें दूसरे लोगों के खिलाफ खड़ा कर दिया। यह दिलचस्प है कि वह इस बारे में बात करते हैं कि कैसे वह अपने कई समकालीनों से आगे बढ़ रहे थे क्योंकि उन्होंने खुद को दूसरे लोगों के साथ प्रतिस्पर्धा में खड़ा कर लिया था।

इस क्षेत्र में जीवन विनाश की गतिशीलता, शक्ति की गतिशीलता और विनाशकारी प्रतिस्पर्धा की गतिशीलता उत्पन्न करता है। इसने पॉल को एक ऐसी पहचान बनाने के लिए प्रेरित किया जहाँ वह खुद को अन्य लोगों से बेहतर मानता था। अन्य लोगों को उसकी और उसकी उपलब्धियों या जो कुछ भी हो, उसका अनुकरण करने की आवश्यकता थी।

यह सब तब समाप्त हो जाता है जब पॉल को मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया जाता है और इस नए सृजन युग में लाया जाता है जहाँ वह अब दूसरों के लिए प्रेम, सेवा, विनम्रता, मसीह की मृत्यु में वास करने का तरीका अपनाता है। वास्तव में, अब उसका बड़ा सवाल यह है कि पॉल के रूप में जीवन क्रूस जैसा कैसे दिख सकता है। जब पॉल शक्ति सौंपने, शक्ति समर्पण, दूसरों की सेवा, दूसरों के लिए प्रेम और क्रूस में वास करने का जीवन जीता है, जब वह उस तरह का क्रूस के आकार का जीवन जीता है, तो उस तरह का जीवन और भी अधिक पुनरुत्थान शक्ति उत्पन्न करता है। उस तरह का जीवन ईश्वर की उपस्थिति के आशीर्वाद का सृजन करता है।

पॉल चाहता है कि उसके समुदाय जानें कि जब आप क्रूस द्वारा आकार दिए गए जीवन को अपनाते हैं और आप क्रूस द्वारा आकार दिए गए अपने व्यक्तित्व को जीते हैं; आप अपने समुदायों में और भी अधिक पुनरुत्थान शक्ति का आनंद लेते हैं जो नवीनीकरण, पुनर्स्थापना, मुक्ति, एकता, आपसी आनन्द और ईश्वर की महिमा लाता है। यहाँ विशेष रूप से चर्चों के बीच विनियोग के माध्यम से, मुझे लगता है कि हमें ईसाई लोगों के रूप में बहुत सावधान रहने की आवश्यकता है ताकि संस्थागत पहलुओं को शिथिल रूप से पकड़ सकें जो ईसाई अस्तित्व में घुस जाते हैं। संप्रदायिक निष्ठाएँ, सैद्धांतिक विरासत निष्ठाएँ, मेरा चर्च, मेरी संस्था, मेरी सेमिनरी, मेरी तरह की धार्मिक अभिविन्यास।

मेरे लिए बड़े ईसाई चर्च के भीतर एक उपसमूह के प्रति वफ़ादारी रखना और उसके प्रति जुनून विकसित करना और फिर उस उपसमूह के प्रति अपनी वफ़ादारी के आधार पर अपनी पहचान बनाना बहुत आसान है। मुझे लगता है कि मेरे संप्रदाय के प्रति मेरा जुनून ईश्वर के प्रति मेरे प्रेम को दर्शाता है और यह किसी तरह ईश्वर के आशीर्वाद को और भी अधिक आमंत्रित करेगा। यह समझें कि संस्थाएँ हमारे आशीर्वाद और आनंद के लिए हो सकती हैं, लेकिन अगर हम उन्हें उचित रूप से नहीं मानते हैं तो संस्थाएँ वर्तमान बुरे युग की गतिशीलता के एजेंट भी बन सकती हैं।

हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हमारी पहचान वास्तव में क्रूस द्वारा आकारित हो ताकि अगर मैं अन्य संप्रदायों के लोगों को देखूँ, तो मैं उन्हें कैसे देखूँ? मसीह में भाई-बहन, बहनें, मसीह में भाई, सेवकाई के लिए साथी, पड़ोसी जिन्हें मैं आशीर्वाद देना चाहूँ और जिनसे आशीर्वाद पाऊँ। ये संस्थाओं या शायद मेरी संप्रदायिक निष्ठा या शायद मैं खुद को अन्य लोगों के बीच धार्मिक रूप से कैसे देखता हूँ, के बारे में अलग-अलग तरीके हैं जो मुझसे अलग हो सकते हैं। इन अलग-अलग मुद्राओं के बारे में सोचें, कैसे पॉल दूसरों के प्रति विनाशकारी मुद्रा का एक उदाहरण है, और कैसे दूसरों के प्रति मुद्रा कहीं अधिक फलदायी हो सकती है।

तो, आइए गलातियों 2, आयत 1 से 10 के बारे में बात करें। और यहाँ, पौलुस इस बारे में बात करने जा रहा है कि कैसे उसका सुसमाचार और उसका प्रेरितिक आदेश मनुष्य से नहीं बल्कि परमेश्वर से है। और यह विशेष रूप से यरूशलेम के नेतृत्व के साथ उसके रिश्ते से संबंधित है।

सबसे पहले, आइए बरनबास और पॉल के बारे में थोड़ी बात करें और कैसे वे टाइटस को अपने सुसमाचार के लिए एक परीक्षण के रूप में यरूशलेम ले गए। पॉल फिर से बता रहा है, वह परिवर्तन की इस कहानी को सुनाने के बीच में है। वह कहता है कि वह 14 साल के अंतराल के बाद ही फिर से यरूशलेम गया।

वह बरनबास के साथ गया, और तीतुस को भी अपने साथ ले गया। फिर से, यह दिलचस्प है क्योंकि पॉल कहता है, मैं केवल पद 2 में एक रहस्योद्घाटन के कारण वहाँ गया था। यह एक रहस्योद्घाटन के कारण था कि मैं ऊपर गया था। तो फिर से, पॉल अपने नए जीवन की कहानी को ईश्वर से सुनने के लिए एक निरंतर प्रतिक्रिया के रूप में चित्रित कर रहा है।

इसलिए, यदि आपको पॉल के सुसमाचार पर आपत्ति है या यदि वे गलातिया में हैं, तो यह ईश्वर की समस्या से एक रहस्योद्घाटन है, न कि पॉल के प्रेरितिक, आप जानते हैं, पॉल एक प्रेरित मुद्दा है। इसलिए, वह एक रहस्योद्घाटन के जवाब में यरूशलेम जाता है, और वह यरूशलेम के नेताओं को अपना सुसमाचार प्रस्तुत करने के लिए वहाँ जाता है। अब, यह पॉल का यरूशलेम के नेतृत्व को अपना सुसमाचार प्रस्तुत करना नहीं है ताकि वह जो प्रचार कर रहा है उसके लिए उनकी स्वीकृति प्राप्त कर सके।

जैसा कि उन्होंने अन्यत्र बताया है, वे जानते हैं कि उनका प्रेरितिक कार्य और सुसमाचार प्रचार ईश्वर की ओर से एक रहस्योद्घाटन है। यह कोई मुद्दा नहीं है। उन्हें अपना सुसमाचार मनुष्यों से नहीं मिला।

उसे यह परमेश्वर से मिला था। हालाँकि, पौलुस ने उल्लेख किया है कि उसने इसे उनके सामने इस डर से प्रस्तुत किया कि मैं व्यर्थ में दौड़ रहा हूँ या दौड़ चुका हूँ। इसका यह मतलब नहीं है कि मैंने सुसमाचार का प्रचार पूरी तरह से गलत किया है।

वह जो करना चाहता है वह यह सुनिश्चित करना है कि उसके प्रेरितिक उपदेश का परिणाम यहूदी चर्च और गैर-यहूदी चर्च के एकीकरण में होगा। उसने कहा कि इसका परिणाम मसीह के एक शरीर में होगा, और वह नहीं चाहता कि उसके सुसमाचार मंत्रालय का परिणाम ईसाई चर्च के विभाजन में हो। इसलिए, यदि उसके मंत्रालय और यरूशलेम के नेताओं के मंत्रालय के बीच इस तरह की स्थायी चल रही दरार थी, तो वह व्यर्थ ही भाग रहा होगा।

पौलुस ने आयत 3-5 में उल्लेख किया है कि तीतुस का खतना करवाने के लिए दबाव डाला गया था। इसलिए, वे तीतुस को एक तरह के परीक्षण के मामले के रूप में अपने साथ यरूशलेम ले आए। वह एक गैर-यहूदी है, तो यरूशलेम का नेतृत्व इस गैर-यहूदी को कैसे देखेगा? खैर, यरूशलेम के खंभों ने उस पर दबाव नहीं डाला।

यहाँ वह यरूशलेम चर्च के अन्य नेताओं पीटर और जेम्स और जॉन के संदर्भ में सोच रहा है। उन्होंने तीतुस का खतना करवाने के लिए कोई दबाव नहीं डाला। इसलिए, पॉल और यरूशलेम नेतृत्व बिल्कुल एक ही पृष्ठ पर हैं।

हालाँकि, कुछ झूठे भाइयों द्वारा दबाव डाला गया था। ये झूठे भाई कौन हैं जो पौलुस और बरनबास पर तीतुस का खतना करवाने के लिए दबाव डाल रहे हैं? खैर, ये संभवतः यहूदी हैं जो ईसाई हैं, जो उसी समूह से हैं जो पहले अन्ताकिया गए थे और यरूशलेम परिषद में परेशानी पैदा की थी। ये संभवतः मिशनरियों के उसी समूह से हैं जो गलातिया गए हैं और गलातिया में सभी परेशानी पैदा कर रहे हैं।

पॉल उन्हें झूठे भाई कहता है, जो कि पॉल के लिए उन्हें ऐसा कहना बहुत गंभीर बात है। क्या यह इस बात का नतीजा है कि पॉल इस स्थिति से बहुत परेशान है? मुझे यकीन नहीं है कि मैं इस पर टिप्पणी करना चाहता हूँ या नहीं। यह एक बहुत गंभीर आरोप है, पॉल द्वारा उन लोगों के बारे में कही गई एक बहुत गंभीर बात है जो इस बारे में उससे अलग सोचते हैं।

लेकिन पौलुस ने पद 14 में सुसमाचार की सच्चाई का उल्लेख किया है। यह बहुत दिलचस्प है जब वह कहता है, "लेकिन जब मैंने देखा कि वे सुसमाचार की सच्चाई, सुसमाचार की सच्चाई के बारे में स्पष्ट नहीं थे, तो उसने पतरस से उसका टकराव किया, जिसे वह यहाँ पद 14 में कैफा कहता है।" सुसमाचार की सच्चाई।

मैं यहाँ यह बताना चाहता हूँ कि सुसमाचार की सच्चाई का उल्लेख बहुत ही विशेष रूप से उस संदर्भ में किया गया है जहाँ पौलुस यहूदी और गैर-यहूदी को मसीह में एक परिवार में एकजुट करने के बारे में बात कर रहा है। इसलिए, सुसमाचार की सच्चाई बहुत ही विशेष रूप से परमेश्वर द्वारा मसीह में एक बहु-जातीय, बहु-राष्ट्रीय लोगों का निर्माण करने से संबंधित है। फिर से, समकालीन प्रासंगिकता पर वापस जाते हुए, ईसाई चर्च ऐसी स्थिति में नहीं हो सकता है जहाँ वे इस बात पर कुछ विचार कर रहे हों कि सुसमाचार का जातीय भेदभाव, आप्रवास के मुद्दों, नस्लीय विविधता के मुद्दों, नस्लीय तनाव, नस्लवाद से कैसे संबंध हो सकता है।

ईसाई चर्च ऐसी स्थिति में नहीं हो सकता जहाँ हम सिर्फ़ इस बारे में सोचते रहें। ईसाई चर्च को ऐसी स्थिति में होना चाहिए जहाँ हम सुसमाचार की सच्चाई को उन सभी मुद्दों से जुड़ा हुआ देखें। क्योंकि पॉल ने इसे इसी तरह देखा था।

जब हम यह नहीं समझते कि परमेश्वर इस एक बहु-राष्ट्रीय लोगों का निर्माण कर रहा है और हम एक समूह को दूसरों पर प्राथमिकता देते हैं, तो पॉल इसे सुसमाचार की सच्चाई से संबंधित एक मुद्दे के रूप में देखता है। यह देखने के बाद, पॉल मूल रूप से पतरस का सामना करता है और कहता है, मुझे खेद है, मैंने यहाँ अपना स्थान खो दिया है। पद 5 पर वापस जाते हुए, पॉल कहता है कि ये झूठे भाई, बरनबास और पॉल, एक घंटे के लिए भी उनके अधीन नहीं हुए ताकि सुसमाचार की सच्चाई तुम्हारे साथ बनी रहे।

मैं यही कहना चाह रहा था। जब वह पद 5 में सुसमाचार की सच्चाई का जिक्र करता है, तो उसे पद 14 में फिर से दोहराया गया है, सुसमाचार की सच्चाई। उन्होंने एक घंटे के लिए भी उनके आगे घुटने नहीं टेके ताकि सुसमाचार की सच्चाई तुम्हारे साथ बनी रहे।

इसलिए, पौलुस यरूशलेम में हुए टकराव को गलातिया की स्थिति से जोड़ता है। यदि पौलुस और बरनबास यरूशलेम में तीतुस के साथ हुई स्थिति में झुक गए होते, तो यह इस बात का संकेत होता कि दुनिया भर में सुसमाचार यही है। आपको यहूदी होना चाहिए और आपको खतना करवाना चाहिए।

फादर मोजेक कानून के अनुसार, आप जिस भी स्थिति में हैं, उसमें नहीं रह सकते। उद्धार पाने के लिए आपको यहूदी होना होगा। पॉल इसे सुसमाचार की सच्चाई के मुद्दे के रूप में देखता है जिसका जातीय भेदभाव से संबंध है।

इसलिए, वे तीतुस का खतना करवाने का विरोध करते हैं, जो कि दिलचस्प है क्योंकि दूसरे संदर्भ में, पौलुस ने तीमुथियुस का खतना करवाया था। तो, वहाँ क्या मामला है? यह प्रेरितों के काम 16, आयत 1 से 3 में है, जहाँ पौलुस तीमुथियुस को अपने सेवकाई में भागीदार के रूप में साथ लाता है, लेकिन उसका खतना करवाने के बाद ही। तीमुथियुस का खतना क्यों है, लेकिन तीतुस का खतना नहीं हुआ है? खैर, मुझे ऐसा लगता है कि पौलुस ने तीमुथियुस का खतना इसलिए करवाया क्योंकि वह एक यहूदी है, और जब पौलुस तीमुथियुस को मिशन पर लाता है तो यह एक अपराध होगा।

लोग तीमुथियुस के खतना न किए जाने से नाराज़ होंगे। और यह एक मंत्रालय का मुद्दा है। यह पूरी तरह से ईमानदार और सम्मानजनक होना है; यह एक तरह का मुद्दा है।

लेकिन वह टाइटस का खतना करवाने का विरोध करता है क्योंकि अगर टाइटस का खतना किया जाता है, तो यह क्रूस का अपराध जैसा मामला होगा। यह एक अपराध होगा कि परमेश्वर मूसा के कानून का संदर्भ दिए बिना केवल मसीह में विश्वास के आधार पर दूसरों को शामिल कर रहा है। यह ईसाई यहूदियों के लिए एक अपराध होगा, और यह सुसमाचार का अपराध है।

समावेशन, उन लोगों का कट्टरपंथी समावेशन जो मुझसे अलग हैं, वे लोग जिन्हें मैंने ऐतिहासिक रूप से पापी माना है। इसलिए तीमुथियुस का खतना किया गया। यह मंत्रालय की बुद्धिमत्ता का मुद्दा है।

तीतुस का खतना नहीं हुआ है क्योंकि यह सुसमाचार के प्रति अपराध जैसा मामला है। इसलिए, अध्याय 2 के 6 से 10 तक आगे बढ़ते हुए, पौलुस अब उल्लेख करता है कि यरूशलेम के नेताओं ने पौलुस की पुष्टि कैसे की। यह दिलचस्प है।

यहाँ पौलुस ने उन्हें खंभे कहते हुए कुछ व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग किया है। लेकिन जो लोग उच्च प्रतिष्ठा वाले थे, जो पद 6 में प्रतिष्ठित थे, उन्होंने मेरे लिए कुछ भी योगदान नहीं दिया। वह पद 9 में आगे कहते हैं कि वे वे लोग थे जिन्हें खंभे होने के लिए प्रतिष्ठित किया गया था।

ऐसा क्यों लगता है कि वह यरूशलेम के नेतृत्व के बारे में इस तरह से व्यंग्यात्मक तरीके से बात कर रहा है? क्या पॉल पीटर, जेम्स, जॉन और यरूशलेम के नेतृत्व के अन्य लोगों के प्रति शत्रुता दिखा रहा है? मेरी राय में, मुझे ऐसा नहीं लगता। मुझे लगता है कि पॉल जो करना चाहता है, वह गैलाटियन पर थोड़ा सा कटाक्ष करना है क्योंकि वह समझता है कि उनकी प्रवृत्ति नायक पूजा की है। ये उच्च-उड़ान वाले, बहुत, बहुत दिलचस्प और अच्छी तरह से जुड़े हुए लोग यरूशलेम चर्च से आए हैं, जो साख का दिखावा कर रहे हैं, और गैलाटियन इसे समझ रहे हैं।

और यह छवि से जुड़ी सभी धारणाओं को दर्शाता है। इसलिए, अगर मैं किसी जैसा दिखता हूँ, अगर मेरे अच्छे संबंध हैं, तो शायद मेरी बात किसी ऐसे व्यक्ति की तुलना में ज़्यादा सुनी जाएगी जो ऐसा नहीं है। पॉल इस बात के लिए उन पर थोड़ा कटाक्ष कर रहा है, ये बड़े लोग, यरूशलेम के स्तंभों में से ये शिक्षक।

दूसरी ओर, जब पॉल गलातियों से बात करता है, तो वह लगातार सुसमाचार को ही उजागर करता है। वह खुद को कम से कम मुद्दा बनाता है, जो दिलचस्प है क्योंकि यह नई सृष्टि की वास्तविकताओं पर आधारित एक मंत्रालय का तरीका है, जो क्रूस की मुद्रा से मंत्रालय करने पर आधारित है। इस पर विचार करने की बात है।

मेरी राय में, हम अपनी दुनिया में मंत्रालय के ऐसे बहुत से उदाहरण देखते हैं जो भ्रष्ट सोच और भ्रष्ट मुद्राओं से आकार लेते हैं। वे वर्तमान बुरे युग से आते हैं जहाँ हम लोगों के प्रति उनकी साख, उनके व्यक्तिगत करिश्मे और उनकी सभी उपलब्धियों के आधार पर बहुत अधिक सम्मान रखते हैं। यह मंत्रालय के बारे में सोचने का पॉलिन तरीका नहीं है।

किसी भी हालत में, पॉल यरूशलेम के नेताओं के पीछे नहीं जा रहा है, लेकिन वह गलातियों पर थोड़ा कटाक्ष कर रहा है, जो शायद सुसमाचार की सच्चाई के बजाय प्रमाणिकता के आगे झुकने के लिए तैयार हैं। लेकिन पॉल कहता है कि इन यरूशलेम के खंभों ने मुझे कुछ नहीं दिया। वहाँ पुष्टि थी।

उन्होंने मेरे लिए कुछ भी योगदान नहीं दिया, बल्कि इसके विपरीत, यह देखते हुए कि मुझे खतनारहित लोगों को सुसमाचार की सच्चाई सौंपी गई थी, ठीक वैसे ही जैसे पतरस को खतना किए हुए लोगों को सौंपी गई थी, और मुझे दिए गए अनुग्रह को पहचानते हुए, उन्होंने मुझे संगति का दाहिना हाथ दिया। तो, परमेश्वर के कार्य की पहचान के आधार पर पुष्टि होती है, जो कि दिलचस्प है। मैं पद 9 में पहचान को देखने की कोशिश कर रहा हूँ।

पहचान, या मुझे कहना चाहिए कि देखना, अक्सर एक सर्वनाश का संकेत देने वाला शब्द है। इसलिए, जो लोग सर्वनाश में शामिल होते हैं वे द्रष्टा होते हैं। उनके पास ज्ञान होता है।

उनके पास अंतर्दृष्टि है। आम तौर पर, ज्ञान या दृष्टि या श्रवण की क्रियाएं सर्वनाशकारी स्थितियों से जुड़ी होती हैं। इस उदाहरण में, परमेश्वर के पुत्र पॉल में परमेश्वर के रहस्योद्घाटन को यरूशलेम के नेतृत्व द्वारा पहचाना और देखा और पुष्टि की जाती है।

तो, यह एक और तर्क है जो पॉल गलातियों को दे रहा है। वे ही हैं जो उसकी विश्वसनीयता की पुष्टि करते हैं क्योंकि वे उसके जीवन पर परमेश्वर के आह्वान को पहचानते हैं और परमेश्वर द्वारा उसे प्रेरित के रूप में नियुक्त किया जाना। यह दिलचस्प है कि कैसे पॉल इस खंड को बंद करता है और फिर आगे बढ़ता है; इससे पहले कि हम अगले भाग में जाएँ, उन्होंने पॉल से एक प्राथमिकता के बारे में पूछा।

पॉल कहते हैं कि यह वह प्राथमिकता है जिसे वह नंबर एक प्राथमिकता के रूप में निर्धारित करने के लिए उत्सुक थे। यरूशलेम के नेतृत्व ने जो एकमात्र बात जोड़ी वह यह थी कि उन्होंने हमसे गरीबों को याद रखने के लिए कहा। वही बात जो मैं करने के लिए उत्सुक था वह बहुत, बहुत दिलचस्प थी।

अगर आप इस बारे में सोचें कि कैसे शुरुआती चर्च के दो पहलू, गैर-यहूदियों के बीच मिशन और यरूशलेम में खतना किए गए लोगों के बीच मिशन, तनाव था, लेकिन उन्हें एक साथ रखा जा रहा है। और एक बात जिस पर ये दोनों पक्ष सहमत हैं, वह है गरीबों की प्राथमिकता। फिर से, इस बारे में सोचें कि हमारी दुनिया में मौजूदा व्यापक चर्चाओं में, अर्थव्यवस्थाओं पर ध्यान केंद्रित किया गया है, विकास पर ध्यान केंद्रित किया गया है, वेतन आदि पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

यह कहना एक प्रलोभन है कि, राजनीति के लिए शास्त्र का क्या महत्व हो सकता है? परमेश्वर के लोगों के लिए, गरीब एक बड़ी प्राथमिकता है। रिचर्ड हेस कहते हैं कि यह बहुत संभव है कि पॉल के मन में व्यवस्थाविवरण 15, श्लोक 7 से 11, हों। ध्यान रखें कि पॉल के पास शास्त्र के अनुसार मन है।

किसी भी चीज़ के बारे में सोचते हुए, वह पवित्रशास्त्र में आगे-पीछे घूम रहा है, उन पाठों के बारे में सोच रहा है जिन्हें लागू किया जा सकता है। इसलिए, बहुत संभव है कि हेस यहाँ पर सही है। व्यवस्थाविवरण 15:7 से 11 में यही कहा गया है।

यदि तेरे किसी नगर में, वा देश में जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है, तेरे भाइयों में से कोई तेरे संग कंगाल हो, तो अपने मन को कठोर न करना, और न अपने हाथ को उसके लिये बन्द करना। परन्तु उसको अपनी मुट्ठी खोलकर उसकी आवश्यकताओं और घटी को पूरा करने के लिये उदारता से उधार देना। सावधान रहना, कि तेरे मन में ऐसी कोई नीच बात न आए, कि सातवाँ वर्ष जो क्षमा का वर्ष है, निकट है, और तू अपने कंगाल भाई से बैर रखता है, और उसे कुछ न देता है।

तब वह तुम्हारे विरुद्ध यहोवा की दुहाई देगा, और यह तुम्हारे लिए पाप होगा। तुम उसे उदारता से देना, और जब तुम उसे दोगे तो तुम्हारा मन उदास न हो, क्योंकि इस बात के कारण तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे सब कामों और सब कामों में तुम्हें आशीष देगा। क्योंकि देश में कंगाल लोग कभी न मितेंगे।

इसलिए, मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ, कि तुम अपने भाई के लिए, अर्थात् अपने देश में अपने दरिद्रों और दरिद्रों के लिए अपना हाथ खोलो। कुछ लोग सोचते हैं कि यह संग्रह का संदर्भ है, जो यह सुनिश्चित करने के लिए पॉल के चल रहे मिशन का हिस्सा था कि यरूशलेम में गरीबों की पर्याप्त

देखभाल की जाए। लेकिन यह बहुत अच्छी तरह से भी संबंधित हो सकता है, और मुझे लगता है कि यह अधिक संभावना है, मंत्रालय के लिए एक सामान्य अभिविन्यास के साथ, कि जहाँ भी ईसाई चर्च स्थापित है, जहाँ भी ईसाई समुदाय हैं, पॉल चाहते हैं कि वे समझें कि गरीबों की देखभाल करना प्राथमिकता है।

फिर से, एक और तरीका जिसमें परमेश्वर के लोगों के समुदायों द्वारा अनुभव किया गया पुनरुत्थान जीवन अस्तित्व के समग्र तरीकों से जुड़ा हुआ है। ऐसा नहीं है कि ये ऐसी आदतें और अभ्यास हैं जिन्हें हमें करना चाहिए क्योंकि परमेश्वर ने हमारे लिए बहुत कुछ किया है। यह अधिक मामला है कि हम अपने समुदायों में पूरी तरह से निवास करने वाले परमेश्वर की उपस्थिति का आनंद लेते हैं क्योंकि हम नई सृष्टि का हिस्सा और अभिन्न अंग हैं।

इसका पूरा आनंद लेने का एक रणनीतिक तरीका उन लोगों के प्रति उदारता और आतिथ्य का व्यवहार करना है जिनके पास कुछ भी नहीं है और जो सामाजिक रूप से बहिष्कृत हैं। इसलिए, गलातियों 2:10 तक पॉल के तर्क के साथ आगे बढ़ते हुए, पॉल न केवल अपने प्रेरितिक मंत्रालय के लिए बचाव पेश कर रहा है, बल्कि वह अपने स्वयं के जीवन को यीशु मसीह के सुसमाचार की परिवर्तनकारी शक्ति के चित्रण के रूप में चित्रित कर रहा है।

यह डॉ. टिम गाम्बस की गलातियों की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह गलातियों 1:11-2:10 पर सत्र 3 है।